

त्रिपुरासार

ASHA ARCHIVES

3443

[illegible][illegible]

धूपदीपे च पवनान्यासको प्रिया। समर्थयत क्रमाको व मनूवित फिन मान सः। न मेव लोके यै कस्य जल तत्र स्या सादनी सम
 यली स्या तसर्वस्य निवर्त्ये पीति दायकी हामा रुदे हुन रूपः पूषु द्विय निवानने। नृह्य मरुत्वा धि क्राना गाने वा क यानि पूषु
 तां लोकादि के पीमदा वा र्थ पादे १ गभय पथा दूत यव कृणा गुतिल सवया १ दूर्वा वतिक मा दूर्वा १ दृष्टा ह कमिता निरं। पाद्ये
 यामा क दूर्वा द्वि विष्णु का का रुद्र यत। जाती लवंग क काले मन्त मा व मनी यकी मध्य क श्रम को द दक्षि पा क मनी प्रिदि १
 १ शुद्धा रुद्रि वि वि हिते पुन वा व मनी यकी वन्दना गुन क पून य क गभ मि दायत। अन्तर वा अम्भुजा त्पल वन्ध जीव
 विजया पुन गना गाना ॥ जाती कन्द क नृ व मय क ज पा गृधी न सा पा र ले १ निम्बा १ ला क रु या नि क रु म द ने म दाय दूर्वा
 दले न द्वा का य य या जित तिक सु मान्य का नि न कान्य ल मिति ॥ तले वा गु नु ल्वे गुन नीन पिता ह म भव न्दने १ मान ही
 न वि नि दिक मन्तु नी य १ य धूप यत ॥ गाम पि वा वा त ले न व ह्य विल य ग रु यो ॥ दी पित मन्तु नी १ पु र्द दी प मन्तु १ पद
 न यत ॥ मन्तु नी न मन्तु १ न पा य स ने मन्तु पि वा ॥ पिता द क स क दली द द्वा १ य नि व द य दिति वा ॥ आव न पा य ज दि न
 या ति वा मे ति ॥ ख वी जन व म्भु मा लना त द वे द न य ति ॥ काम ध्य ति ॥ म्भु मा ह न ख म न्तु म्भु मा ह न ख क ल मिति ॥ पु र्व म्भु
 नी १ य व द ल षु द व ता १ स मा दि ग ति ॥ न य य श्र क द व ता १ ति ॥ दा वि न्या या १ दा वि ली का १ हि ली व ली क न ली ॥ आ क र्षि १
 म्भु मा हि नी १ ति ॥ द्वि ती य मा व न ला मा हा त ता रु ग र्वा मिति ॥ पत्र न य वा मे नि ह्य थ १ वि मर्य वि मर्य म्भु ॥ य दा रु १ द द्वा

निविठामृष्टि न्नासिका र्थित तर्जनी ॥ म्भु वि मर्य म्भु मा हा त वि मर्य या व न का वि ली ॥ नृ क दाल ॥ न य क दाल ॥ त नृ द्द १ रु १
 १ म य १ ना द वि दार म्भु ॥ य धा की मन्तु नी १ रु ता म्भु ॥ द क्षि लाना म्भु १ दिका ॥ त र्जु न्दु १ ग र्वा गा त वि द्वा १ म व या र्ति ॥
 वा गृ वी न का न १ स द लु स वि र्द ॥ व म्भु व क्ति वी र्ज ॥ वा म द क व द्धु थ व न १ न्दु र्वा वि द्द १ क ल पु र्वा न ल ग १ स व र्वा १ अ म्भु र्द व
 १ १ रु य म पि प ह्य क या न मिति रु व १ अ म्भु द ल स य या मा हा व क्का ली मिति ॥ अ वि वे क्ता व रु वे क्ता १ अ म्भु जा न मा ल १ य द्वा १
 मा ला १ रु नि ह्य दि क् पा वी दिका ॥ नि खि नि म य १ क म्भु १ र्वा १ न य व न १ वी वि न त य १ ग नृ १ काल १ व न १ रु १ स मा र्ते ग १ नृ
 ना व त १ जा म्भु न द क न की ॥ अ न त १ आ का न १ दी र्घ न रु र्का ॥ आ का न य त १ द व १ १ न क न य १ नृ क न १ नृ १ रु १ अ न क य
 ता ल व १ रु १ द्वि ती र्थ ॥ द ग कान के य र्ज १ कान १ क लार्क रु व १ १ स कान य त १ रु ती र्थ ॥ ति थी १ १ स व १ १ स न का रु गु १ आ का न य त
 १ स कान १ व रु र्ध रु र्नी १ व रु १ अ न क म हि र्द व कानार्क ॥ द्वि ती य स्वन य त १ स कान १ र्ध र्म र्ती १ १ न कान १ व का अ न त सा हि
 त १ आ का न म हि त १ स व १ १ स क य र्ध र्म कान १ म्भु १ नान्ति त म ध व र्नी ॥ आ का न य ता व कान १ स फ र्म व द र्नी ॥ वि स र्ग १ १
 वी ना थ १ १ ग ग र्ज रु व १ १ काना वि ता आ का न य त १ १ अ म्भु १ आव न ला न म मा हा ॥ अ धा सि ती ग मि ति ॥ प ला नी क ली वी र्ज द र्ग यः
 ति रु ना रु ती र्थ १ न कान १ रु ग र्ज रु र्द १ क लार्क रु व १ १ अ य पि रु म नि १ ला व ना क मी कान १ नि ना क नार्क वि द्द १ द ला या व न
 पू ज मा हा ॥ या रु रु क १ ति वी र्ज द र्ग य ति ॥ र्ती १ १ न्ति द्वा द न ख व १ व हि १ पू ज मा हा ॥ यि र्गु ग्वा मा १ मि ति ॥ य वि १ व र्ज १ क ग ल म य

केशवकवि। षष्ठ्या फस्यवायाः रुलरुदं दर्शयति ॥ मूर्च्छांति मूर्च्छानि। अष्टावद्धः पवणी हूतः मृतः लीनः। डक्रीहि।
 कानि। अष्टावद्धः। मृवणी कनकात्मकः। मृतिर्विलीनतावायाः। गानीनम्यतिकथयति। मूर्च्छांति मृच्छानि। निहन्त्या
 मयली मृतः। मृदुः। श्वेततां कथा। उमावायुश्चरुवीतिव ॥ ॐ मृक कृक कदयाद्या मयताया गिनः मधुना डीप विष्टयव
 नम्यपुष्टादिव मूर्च्छायाः सकलाः पुष्टया रुवन्तीत्यर्थः। नियतापि मृतिः कथमन्यथा कर्तुं कथं न कृतं ॥ त्यागं श्रद्धां स
 मक्रमस्या मृतः। मलरुमयति। जितमातत्रिंशमिहा प्राप्ताया मारुतं कृक रुदं दर्शयति। अर्थाति। काकीति। एता कद
 थन अर्थात् नदः। कमयातकः। अनन ॥ दंश्च निती। पूर्वपूर्व कृक मिक्षानां डलना रुवकृक मयका मिकावः। के
 मृतिः। पायः। अयानद्वात्र मिह्यर्थः। नत्रिपुः। कदुः। कलजानितयजन्माधय। नतपुयाजनमोह। मयस्मान् ॥ ति। तद
 हि क्लान्तं दर्शयति। तदति। तदवविनिनश्चि। आदोमहानीत्यादि। अयवनादरुद्रानकस्य डयलश्च डुपेनमाया। कृनम
 या कृनमपि दर्शयिन सव्वस्मिक मरिचि। मय्यापलस्यत्वमपि दर्शयति। मयनाजति। मयनाजतनूजा अरुनः। तय्यवेनी
 कदुः। मरुसाण्डातिमह ॥ ति। वरुमानपुत्रयन मरिचि। मय्यापलस्यत। अवक्किन्नपुटलिश्च वय्यत अस्यानसम्भ
 डुः। रुलं दर्शयति। परिहावयत ॥ ति। उदीपाफा हि क्लान्तस्यापि नदस्यैव मूखी कनकात्मकया। गालमं दर्शयति। ॥ ग
 चीति। ॥ गालि। ॥ श्वानी। ॥ द्रिया। ॥ विप्रिवत्। ॥ गुह्यतः। ॥ नीमधुमा। ॥ रुः। ॥ कडुनतना। ॥ सिविवना। ॥ अंगुली। ॥ रुनाम्यमिति।

[illegible]

७७

द्वितीयांशः। अथ नव। कामयुगोत्पत्तिरिति। अर्थात्तद्वर्जितः। कर्तार्यामिषः। सत्त्वं। निर्वर्तकं। दया। मित्रा। ॥ इति। अथ तद्वि
यात्मात्मपदवतायनामर्षेष्टीयस्याधिन। तथा अथ तत्तत्कृतं। जान। यात्। विमृ। ण। दित्यर्थः। यदुक्तं। निव। मू। धीव। तात्
मत्वा। सिद्धि। निति। तत्त्वा। र्त्तिके। य। धी। निति। आत्मन्यस्य। विमर्गनविना। नदा। धिषे। तात्तद्व। तात्तमत्त्वमिद्धि। आत्मवधादिति।
अथायमहिमभिः। वेदकवेदनवद्यात्मकवक्तिमूर्यसमावेष्टागयनामर्गमयविंदूययनेमनिर्ववि। वात्पल्लिदुनुः
यधना। किमहायान्यनरुदात्मानसदापवित्रमर्कसुनुर्नधियासमावि। दिति। अथथव। कालानलसहप्रसिद्धि।
रुधा। तिका। मात्मककुर्जगनकली। वा। रु। गुथान्यतकवव। सवायनृपक। उलि। वीजं। वामदकि। ण। रुद। नया। फय। यकारं
यअवात्रया। नकम्बा। स्वगुनुमखादवगतं। मूलो। धानकमलक। ण। काया। नोवा। विकयत। तथा। वा। पीमत्त्वकदम्ये। हा। या
मसूया। निमक्षु। सूय। सामा। निमक्षुगा। मोकदा। विरुवदग्निः। पूय। सामगुतपि। या। सोमा। निमूय। मक्षु। तथा। नी। धा
ममक्षुगा। पूय। नि। धाममक्षु। यनाकुलिनी। द्वि। ता। ॥ इति। तस्याद्धुतस्यपुत्रपुतियादितकामस्य। निखा। तदुक्तिः। मूलय
कति। नृया। विन्दु। रुतमर्कवावाक। ण। कि। निति। यावत। उकी। हि। नादात्मकं। यनीवीजं। सर्वद्वुतस्यवद्वितमिति। वेतन्य
महाज्ञानक्रियास्वतन्त्रा। उकी। हि। वेतन्यमिति। विवक्ष्यसर्वज्ञानक्रियान्मर्कस्वातन्त्र्यमिति। अकला। निकला।
कलननवधननज्ञानवादिनाचनहिता। अकला। अकानयकला। अक्यववृया। अनवक्षान्मिकतियावत।

ग्री

उकीहि अनयत पर्वप्रति ४ पर्वपा लिङ्गदिष्टि मिति। यामात्रपरीलतातनूलमरु नूद्वितिस्य द्वितीति। तथा
 ११॥ ह्यनुर्य अयेन अयनमिदुतः हतीय हं सन्ति। प्रथममनुमधं ग॥ द्वितीयाह दय विदुपद हतीय हं
 सन्ति। प्रतियादितवस्वनाया ४ प्रकृतव्यिकमपि नूर्य द गयति। ११ कीति। प्रकलं ग कि ४ सामर्थ्य पञ्चविध
 ह्ययगयत घटकस्वरु वंदनयति यानमध्वरी स्वातर्क कृत्तुलिनी कृत्तुमहा प्रयवतात्मनि निनीयत नूति कूठ
 लिनी उकीहि मदान तत्त्व विवद्वल ११ यडावट पत्रिदिवा विट का सोलयसु त नूति। कृत्तुलाकामावा मादिरुदन
 वडिन्नस्वरुवा। उकीहि यावामादिविरुदन वडुद्रा पत्रिपशुता ग कि ४ येतिमानि नूति निवस्य समवाचिनी ॥ ११ कृत्तु
 लिनी तता नूत्यादिवा अनुपुव। ग कि ४ कृत्तुलिनीतिव। नित्यवद्वल गृगाट वयु विवस्य जमरु निति निदिगता १२
 गमय नितनयि कृत्तुतिपादिता। आग्नेमर्षका। आनद्वगनायन प्रसिद्धा नितमहायानि स्वरुपा। उकीहि काना
 दिहृतयद ११ ह्यादिना पावान ग कि ४ मवविद्वल ११। उगादिति उकीहिलघुरुद्रा न के ४ विवजननयायानवद्वद्व
 मामिति विवजननरु निति। तस्या उवलि यिधानममयिती। अयनूर्य द गयति। ११ खति। अयमयावरुनस्वरु। उकीहि।
 धमय रुमिकावाला ११ विधानितयादिता नूति। ११ खोवरु वद्वयय पत्रिद्वतमय निमा ११ ल्यायसु फुजगा काना मरुगा
 यनिम ११ ल्यानिहितममखास्वमायावलयावद्वितयधाननूर्य पवद्वद्व। वाधितावाति तीव्रवगा उरुयात्मना विजगत्माहि

अ

नीयसफजगतीवरावनमाहयति। उक्तितायिजगद्विलापयति। अत आदृशप्रहता कितययवगवाना प्रतिहं साकृटिलाय
 संचनकी यनहं प्रविलासिनी रुवाना पलर्य स्वात्म नयनमर्तनातीति। तन्मा ११ प्रकृत हं सम ११ ह्यकात्र ११ गुनूयदिष्टन
 यथ ११ गुनूयदिष्टययन विवगवमका कृत्तुलिनी मूक्त ययति पादितया विकलया पूवो कन स्वात्मनावसहसामानाधिकनयः
 विधाना मममय उवद्वत कृत्तुलिनी कोलिकादिहा विवगु मूलाधना विदवता तन्मा ११ वद्वमहायथनया ११ वद्वका ११ यमध्वनाशा
 पूवो कमाया नूर्यममचन नव ग कि ४ मूद्रा नयत। वद्वमान मूद्रा नयत। उवद्वद्वित्यनव विवि। अत ११ गुनूयदिष्ट विविनतिवा
 नयमकी। अत ११ द ११ ग्री गुनव उवप्रमाणा मितिनाधिकमूत्मीलितो वेतनमात्रा कला ११ हं सखनूर्य ११ ११ मर्षका कोलिका
 ग कि ४ नूति यद्वयनयनामध्वनिय ११ लघुग्री गुनमखेन वमरु नूर्य स्वपनाम ध्वनियन ११ यसु कलर्य ११ लिङ्ग ययमि
 ति। यद्वयट लवद्वमा ११। कमलजयदात मूलाधनात आत्म ग कि ४ हं सीधामा ११ उवद्वमा ११ स ह्यारविमर्षन मूद्रा नय ११
 नूति विवद्वम ११ लगत ११ ग्री गुनान्न उयेनियरी रुविद्यति ॥ यीत्वा ११ कलामृतमिति पद ११ द ११ निजकलमय मूलाधन
 ह्यमात्राया गन मात्रा कालयनिमा ११। उकीहि कालनयावता स्वीया ११ हं ११ खजानम ११ ली यथति मात्रा सा ११ यति। मा
 गीथा ग ११ उवद्वयथा गयद्वकी मात्राया गन दवलि मूद्रा वद्वका नयत। मात्रा गीयतवा ११ उवद्ववग वरुिनी ११ उव
 न ११ मरुजाद वि दहम ११ यवद्वित ११। दलिकवनयति पादितन उरुमादितन उरुमादितन ११ यद्वकी पूवो नय क

७१

आनिर्मलामिका बहुकलसमाधनं बहुषष्टिपमन्त्रिणी बहुसिद्धसमायुक्तं कर्तृपिद्विहृतपदं खड्गीनां प्रथमो वृ
 लज्जलपदनिवेगितः त्वकश्चाक्षुष्यवर्णः नृपसंज्ञितः ॥ १ ॥ एतद्व्याजानकश्चिह्नः प्रवाहसंयवश्चित् ॥ २ ॥ गुम्
 खलनृपः समतातयनिर्मलः ॥ ३ ॥ गार्कडुपीनानि स्वारुष्याः यविविकृत्यतः ॥ ४ ॥ जायुकामतर्कः ॥ ५ ॥ मधुदक्षुवा
 मतः ॥ ६ ॥ अगुदण्डकोटिर्मु ॥ ७ ॥ गार्कडुपुर्कः ॥ ८ ॥ वृद्धमाककमश्चक्रमाधनं यदुर्गुली ॥ ९ ॥ तत्राद्याप्यकृत्वा नित्यं ॥ १० ॥
 धकगुणान्विताः ॥ ११ ॥ आकालस्वयं रुक् ॥ १२ ॥ अमुमातातुललरुतः ॥ १३ ॥ जलपद्मगतं यव ॥ १४ ॥ मादपी ० समन्त्रिणी ॥ १५ ॥ पुत्रावपु यदा
 धायतः ॥ १६ ॥ नाकिपृष्टिकर्तुवतः ॥ १७ ॥ नृपज्ञातकनाधारं ॥ १८ ॥ दक्षपी ० गतं यदा ॥ १९ ॥ तदायुष्टिनिवा नाग्यं ॥ २० ॥ पूर्वस्यासाक्षिर्यनरु
 ता ॥ २१ ॥ तेषु ना ॥ २२ ॥ वामपी ० गतं यदा ॥ २३ ॥ अस्यासुतकमया ॥ २४ ॥ गन ॥ वग्याकर्मणमाव ॥ २५ ॥ भागव्याधिहर्नयैर्कमा
 न्नेखवतविजतः ॥ २६ ॥ रुगुकामसमाधागतः ॥ २७ ॥ अस्यासायुगुणानलरुतः ॥ २८ ॥ नाकिपृष्टिवग्याकर्मण्यनक्षारुपेयकनियमि
 त्यादिनामहतागुने विरुतः ॥ २९ ॥ यतितादितः ॥ ३० ॥ नाकल्यनव ॥ ३१ ॥ बहुपी ० नमकत्ववुर्व ॥ ३२ ॥ पुष्टितत्ववपुतितादिनी ॥ ३३ ॥ ममा
 नस्यगुह्ययत्ना ॥ ३४ ॥ अस्यापिगंधस्यतस्मदअस्मादिहव ॥ ३५ ॥ कतः ॥ ३६ ॥ तिनावधीकिश्चि ॥ ३७ ॥ अतस्मादगु ॥ ३८ ॥ यदिवहसा
 धनवद्वा ॥ ३९ ॥ पुष्टयं तेदर्थी ॥ ४० ॥ गुनव ॥ ४१ ॥ वायास्य ॥ ४२ ॥ हर्तुयुक्तमवक्रम ॥ ४३ ॥ कवलार्थः ॥ ४४ ॥ तिमेतविशायकयाविद्वयद्वया
 यविकल्पः ॥ ४५ ॥ अनसम्मानरुतमाहा ॥ ४६ ॥ मूलाध्वेहादिनाक्रम ॥ ४७ ॥ तिपुष्टयद्वयं ॥ ४८ ॥ क्रमण ॥ ४९ ॥ समकोन ॥ ५० ॥ मधानत ॥ ५१ ॥ तदपिप्रा

७६

पुनर्ल

खदनिर्तसम्बादगीधनेवसर्वादी ॥ १ ॥ अथपुनरुपतितादिताधमनूविधिपिठिकायां लिङ्गदण्यनतावलुष्यात्यकिंदण्येति ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नाविहात्रमूर्धन्ययति। हृदयमनसं। ति। अनाहर्त। हनननविनानददृपस्यानाहतरुद्रानककस्यापिद्यकमुनवा
ताअनाहर्त। अनद्यत्तकामनाहर्तनामिदं। नानामनायति ततवन्मयी। प्रत्यक्षनत्यादि। अहर्द्राजकपि

श्री

[illegible]

निमित्तमर्थवत्तम। मीदिनस्य ककारस्य सुषिन्नगुरुकान्त। अथ उर्वविषयनृपाकद्वयोर्हृयादियत्तुषु विलिख्य कार्यान्
गुल्यानयानानपुतिष्ठाया यत्तुवीजजीवगायादिहिविहृष्यगुलिकल्यमूलसूत्रुद्धनस्य वलुपनिवर्द्धितं। ॐ ह्यः
यर्का। सर्वविषयेषु अगव्येषु अमृतादिहिनरुषिवाकायानगुल्यानयतादिसंजयायापुतिष्ठामनुमयिष
हृषादि कुमलजपित्वा दगांगारुवनलज्जसंघातादिमिकीमादिनमूह्लादिगिखादिमुनसुप्रजनयदित्यारुपित्या
होजनरुतादिमिद्धमिति। नकाप्रहर्षदण्येति। ॐ यन्नकासोन्नादिति। धेनवगुरुलदण्येति। ॐ हति। विद्विर्लप्यकल
लोच८वनमहिष८विगुकायावाद्यु८कील८दाना। अस्मयानमाला। पिसमसुसिद्धिर्भवतीत्याह। इतर्यकनरुतिगकि
गमागमीपूर्वाक्यानिमूहर्षध८यत्तुननमाह। आद्यविति। मन्मथ८पुसिद्धं कामवीजं नृद्वदवर्गते कामाक्षिनाजं
हृन्नेखावीजं लिखत। प्रथमं हृन्नेखालिखित्वा तं पुसिद्धकामवीजननविषयदित्यर्थः। ॐ हकाक्षिनाजमिति। हृन्नेखा
हानकामवीजं विद्योद्वितीयमित्यकाकाकान्तवाक्यकूलत्ययर्त्तं। ॐ तर्नवीजमिति मप्रतिहाति। तस्यानुविनिधागाः
ननारुवात। तथा वतु८गतीदवटिप्यालकामस्यमिति। यत्तुपुष्पात्रामधवीजमित्यस्मत्तयनमधिन८धका। ॐ धम
कनश्चजीवकीर्त्तनतत्सकलमनारुवस्यर्त्तकानस्यम। धकत्वा तन्मायया। ॐ ह्वानं वद्वेयदिति संप्रदायशमधुः
नाम० ति। संप्रदायाश्च मधुकाहृन्नेखायाम। धनरुणां ००० कार्वाणसाधकस्य नाम कमाधिसाधकस्य समीयाति

ति॥ हि न व्यति॥ काम्मर्वावप्यकर्म॥ वाङ्मूपायाः ४ मूना रुदात रुल रुद द ग यति॥ उरु न सिद्धि विद्यादि॥ मता क
नवा मूना रुद द ग यति॥ अत्यन्त॥ तन्मतेनापि विवितायोगं देनयेति॥ जिह्वा उरु न व्यति॥ विग्रहान्नवग्निः ॥
युक्तं क्त्वा यस्मिन् कर्मणि यशुक्तं ततश्चात्र अयमर्थः ॥ स्वादिमता वदन् अस्यान्त कृतिवन्ति॥ एवमस्मिन्मत
जिह्वा यामन्यस्यामधीति न हस्यं॥ उक्तं हि॥ वक्तुं स्वादिमतं न्यस्य यथा न कृतिवन्ति॥ जिह्वा नवाधां उक्त्वाः
स्त्रीष्वयं रुद दयीति॥ वाङ्मूपायाः नवकुं॥ क्लृप्तमात्रं विलता दक्षित वदनं॥ उक्तं हि॥ मूर्खं तस्य रुद दयावत् क
लुमानमर्दयितमिति॥ नामकत्रयं दगयति॥ कुर्यादिति॥ प्रीमन्नामग्री ४ गकि ४ मो अरु रुववी॥ ततो रुववः
स्त्वमिति नाम कुर्यादित्यर्थः॥ यत्रिस्तत्र विधिं दगयति॥ हा उ ४ पूर्व॥ पूर्वरागमिति॥ हा उ नयं॥ क्लृप्त्ययं धि मे
राग गच्छति सम्बन्धः॥ यत्र साधनप्रकारं दगयति॥ तता वामराग गच्छति॥ यत्नामान्मजा वल्लरु ४ गयीति विदुः ४
तदाणायागानां प्रागगालीत्यर्थः॥ सोम्यकर्मणि विष्णोर्वालि यत्नालि दगयति॥ सोवर्गुनीति॥ सोल्वंतामुर्जीक
न कर्मणोर्वापुर्दगयति॥ भल्लं ददति॥ पाठद्वयप्रान्दल विधिमाह॥ अथति॥ अन्नघातनादिकान्यपि दगय
ति॥ कृतघ्नतति॥ कृतघ्नतुडि यत्र विलिख्यत॥ अथ मूर्खी स कृत्रं दतनायूर्य अन्नरुनताजं गात्रयं नि
नृथपथ कृतघ्नतदयत्रि अथ मूर्खी निधाय ददयं गलपकात्पदगयित्वा तदूरुनत ४ दिह्वा २ य उ य स्य या

[illegible][illegible]

धागांश्चक्रयावद्यस्यववनतामिदियाणामिदं। अभियति। पूर्यैकमाह नृपमित्यर्थः। अयं हावः स्वः
 क्रांतिमितायवहावतयासर्वेषां प्रकारमानंदकिंवातयदुहिमिहिवाहिनिनयपती। दक्षिणैर्महावपुध
 नीनिवदृपांगकेषुपाकेद्वानादिमन्त्रादिनृपेयवदुविमिदिति। मृद्विषयाने। गकिंस्वरुवे। जिघादिविज्ञा
 नाकलनादिनृपेयवदुहिमिदिति। यदुर्कमिति। रुर्कगकिंममाख्यातावृति। वाममृद्विप्रितियाक्रा
 म्हावदक्षिणविद्वनिव। पूर्वमकलजगन्मयमर्गितरुकायांनृपेयगङ्गायायधविणवात्कर्तव्यायदित्य
 थः॥ यदुर्कमहिगुकावायः॥ सर्वकादिनृपेयमिदमयवदुनामासकयधकासहाववृति। पुतिनयिपवृ
 त्तिगङ्गायुयायपादाद्वगीधमफरुकासायप्रिधवद्वावधकावाववीति। महादवामरुहिजिनिग। अयमर्थः॥
 वृत्तविदग्निमूलाधनकापुष्पात्वाजुनयजनकयात। वहियागदुपथमत। पूर्वकात्वायथातस्वकागृहीतः
 लीलाविशहसफरुर्कप्रियादमिति। कूलनृपेयतरुकायांनृपेयमिविज्ञातरुकायांनिक्रयादिवैथः॥ तदायुधा
 निदग्गयति॥ गकिंवाहिमिति॥ जिघामेककंदगयति। यमति। तरुदुधुमनानिदगयति॥ मृतकयामीकयति
 । महावजतपूर्यसुवपूर्य। यथाधनैर्मज्ञानानावपुसमस्तवपुतिथावत। मरुपुष्पाकनदक्षिणमाधवत
 रुकायांनृपेयतः॥ किंता। कृपुमाधुमापुगकावदुनृपातरुकायांनृमाधनीत्यर्थः॥ प्रत्यकीविनियार्गदग्गय

१३

धावात। अजमखगुधान्तमावाकयावल्यावकर्तुधुजिगतामावागकिं॥ तदन्तयातत्यर्थकयाक्रावः
 लायने॥ यनेत्रावरुनमनागमनत्र। पागुकाकुमालास्वर्यगकिं॥ तनुमृगतापतिनिर्त्ययः॥ वृति। तनुव
 मनुष्यनादोन्मास्वर्यनादामनुत्तमिति। जीविज्ञानरुद्रावकनीत्यासावेति। सततमिहहियकपुतिपादिः
 वनीत्यायमनसादितामनुष्य। वकात्रात। मूलादिवक्त्रनयान्स्वर्यनयति। तथाप्रत्यगाणांमूर्खलिङ्गवति।
 वकात्रात। पुतिप्रदं प्रयाधार्तलिङ्गमिदंमनुष्यवृत्ति। पागुकाकुमयाजयाविजयत। मर्वाक्रेष्टतयानिह
 मयमिति। सर्वम्यस्वानरावमिद्धावरुत॥ **उर्ककिंजीविज्ञानरुद्रावक**॥ यदुनामिदिवानां मरुपुष्पा
 कविंणति॥ अयायव्या॥ समदिष्टं मरुद्रादुल्लराजतेति। रुद्रयाणांमृद्विजीवा विमर्गनामायत्रावृदि
 ति। वज्रयाणावमृजीववृत्तिव। **अयमर्थः**। कूटिलाकृतिरुद्रगामिनीवत्विधिवक्षानमधामुखीवतस्मात्
 । जिघाववतिजितवृगका। यवहर्मयनृपेयतत॥ पुमृयत॥ अथजन्माधनगुहादवात। समस्तपुर्धवाय
 लिकावलायुयात। अतिग्रीवतया महावदुयातगुहायेनमेकलुहमिह्यासातनृपात। यनेमकलुतास्वरुवा
 नासर्वानृपेयान्दिविमर्गनामकमरुद्रावात। अमखगुधान्तमावाकयावल्या। अजं अक्रावादिमरुद्राजार्त। मूर्खम
 र्खयलिकोणी। अमखकामधनृपेय। तज्जनितास्वरुम्यर्गवायकनृपेयतस्यार्कगतावसारुमृगता। यामावा। मति

गतीतिव्यत्यायनाकिंयुयाःनाहकलासमृत्तमात्रातयान्नहनाह तयान्नगतिथाश्रुत्याभाहकाव
 कर्मनाधनूति। निवसुगुथाकनीत्या। अध्याः ४ मि तय ४ सव्वन्नाविन्दवमाकांति। प्रीयत्राणि निकाकनीत्यानिव
 पुवृत्तुं गाठवपुर्विन्धेयतन्मरु निति। प्रीयत्राणि निकाकनीत्यनव। यावोवृत्ति ४ अनववृत्तिप्रवन्धवृत्ति ४ तयो। एवः
 गीकितनु निखिलस्युताः कमाताश्रमिन। गन्तान्मनितनुवता अनस्युतसुक्ष्मनव। निवन्धनस्युतधातादिक्ताकस
 मरुत्तनक्षत्राणि ताना। मानयाजयगदिति वज्रगनश्रमिन्नातितीयत तिधमाला। स्वत ४ सव्वन्नेनवन्नति। तत
 वविद्यानीनयसकामनुवदस्यमिति। प्रीतिवसुगुनीत्याभाह कावीश्रमत्तत्ताममन्त ४ मननता। ननलक्षणाविमर्ष ४ प
 ल्यवमर्षमाधोवितिस्ववयवादिनी। यत्रावाकयाश्रयकपुत्यादतवपुगलसहकायांति। प्रीमद्विद्वयाकनाथया
 कृद्गाससमाधित ४ याकावमेवविश्रान्ति ४ सव्वयकाविनाधक ४ नूति। यकास्वयमसमोदित ४ प्रतियदंतत प्रत्यः
 गानामर्षीर्नैर्गवृत्ति। प्रतियदंतप्रतिविमर्ष। ततप्रत्यगानामर्षतस्या ४ अर्हविमर्षमस्या ४ एक ४ प्रत्यगानामर्षमर्ष
 प्रत्यमर्षीर्नैर्ग। तैर्गतविष्कतअननस्वयमिति। तैर्ग। अखलुवमकृत्स्ननक्तिर्नकाधिगर्त। अयिदुतलुवमत्त
 कावयमत्रसुसव्वानुवयनाययिदलकसव्वधारुवतप्रथमं नूतिनीत्यावमकृत्स्ननक्तिर्नकाधिगर्त। अयिदुतलुवमत्त
 स्वरावमिद ४ जयम्यय ४ प्रत्ययात्मकसृष्टिस्फितिलयथाकत्वात् तदात्मकत्वाच्चतुर्प्राजय ४ कृय ४ स्यात्प्रतिमी

१२

त्रिमासं धर्षयति। घृतति। द्विगुलितभाठगा। गुलाद्वर्णिगदंगुलाश्रुत ४ वाठगात ४ गजाहुर्न। तैलमधुय
 ३ गद्यानामप्यवमित्याह। तिलति। क्रीवादीनां विणधर्षयति। एकमिति। गुलश्वलु ४ कृण ४ तिलोन्न
 पुमृति ४ ककनयुटयविमिता। कर्षेति निष्कमार्त। नत्रयतिमाधवाजमाध ४ वश्रान्धर्षीसिदधयति। ए
 म्मातकति। यविस्त्रवणनिषिद्धहलान्यावृत्त। एणधकृति। जिह्वागुणदुव्यरुदधयति। एधर्षीसीति। एमि
 ध ४ म्मानवद्याधधर्षयति। वृककृत्स्नति। अधिमन ४ यीठा। यकृत्स्नमाह। खलुनक्ति। गुरुका
 वणानिधुनिवपुन्यावृत्त। रुनीत्यादिना। धिमुल ४ कृत्स्नम। गुरुमूवकीगन्धमादिगति। वम्यकति। निखाल
 कृत्स्नमाह। कृत्स्नति। धूमलक्षणाधिकथयति। धूमाधनिति। अउरु। मूवकमयिगर्धयति। खनति।
 वपुतापिदाधमाह। कृत्स्नति। गन्धतद्वदाधमावृत्त। विष्ठासह ४ नूति। दाधवावदानीनिखाकथयति। वि
 कृत्स्नति। दाधकृत्स्नधूममाह। एकमिति। गुरुमूवकमावृत्तधर्षयति। अविर्कृत्स्नति। विष्कृत्स्नगताकृत्स्नधर्षयति।
 यति। विद्यादिति। दधनमठित्यतनस्वरावआवरुगन्धधर्षयति। वामति। अहिहितदाधसहव
 षायशिरुमथादिगतिवस्त्रि। वस्त्रधिका। अश्रुधिकावकयूज। अश्रुसकानूरुह। दिव्यामाधयिकी। अश्रुति
 र्पत्याविणधम्यरुलविणधधयति। वग्यन्ति। कृष्णीकलदी। यश्रुलदी। हामकर्मसमाधयति। पूषुति। यवि

स्वादि। पुहयणा पुहयणविषयोदगयति। सपविहयनानिति। सधाकनयनदुःसांशनिः। गार्कहयिवाक्षमिति। प्राकः
 सुवितः पूजाहमावधानकं अयं दर्शयति। जन्मति। उक्तं हि। कृतयजाविषः प्रसक्तः समनवीजं पृथिव्याति। ॐ
 ति। उन्माधवा मूलाधवाः सकलगूहनगीलतयागुहा अजमूखगुधाकमार्गया। वक्रोदिवदवता। धिष्ठानरुतवो
 मादिना किं नूयगुधाकनतानेन। नमकमात्रा नूतनवृत्तिविह्वकिगतयागुहा अजमूखगुधाकमार्गया। वक्रोदिवदवता। धिष्ठानरुतवो
 सुवहितअवहननवन्नति। मगदसदाहूजति। गकिं तनुनिविलसता उक्तविह्वकिगतनुनिनिनूकनयाता
 अक्षमाला आदिना कामालिका मूलाधवाः दवस्वातन्वात। मनुष्यमनशाणकनधमत्मा विमर्षः। सूत्रसादि
 तः। स्वयं प्रमन्निधितः प्रहयगागा मूर्खः दुष्टमूर्खलिगं प्राग्वात्ता। यकात्रातस्वयं रूत। जयः। जनिगतिलेकः
 वः। उक्तं हि। लक्षयलक्षणाः अयमर्थः। मूलाधवागुहाकनमिधितयुधाकनतविह्वनूयकाकाकनतमा
 गुनूयानेन कामकयगा। कितनुयातादिना कामालिका। तच्छृङ्गा वृक्षास्वातवन्नयति। स्वस्वातन्वालेव
 दाहयति। तत्रयमाह कायाः सदावन्ननात। तदविना रूतसामनुष्यापि स्वतः रूतमिति सूत्रसादिता मनुष्य
 स्वयं भवति। तत्रयतदुक्तयकात्रादीना मूर्खलिगं धिति। काममनुलिगोत्तमकतिपयवाकत्वात्। अक्ष
 मालामनुलिगं नूयप्रियदेवाकत्वात्। अयं सर्वस्यैवानुरावसिद्धंति। अथ जन्माधवागुहादनात्। मूला

१५

कित्वालिगं प्रयमतद्विह्वलाति। स्वयमुर्लीगमिति। मूलावसिद्धासर्क। स्वयमवलम्बतः। तिस्रयमू० लिङ्गगद
 स्मिन्नीयत अस्मरुवति प्रसन्नतीति लिङ्ग। यत आहू० आलर्यं सर्वरूतानां लयनालिङ्गमेव तन्ति। अन्यतवाकः
 त्याकदेवदवस्ये लीयकमर्षदवता। दक्षिणलीयतवक्त्रे वामुतेश्वायहपुहा। हृदययवगायती सर्वदवा
 लमागुहा। लीयकमूर्द्धिवेदोः सुषुप्तपदकमाः। ज० वलीयतमर्षजगत्कवनजगम। यूनवत्ययततस्मा दुक्त
 र्थसव्यावरमिति अत्रयस्त्रिमयीलिङ्गीयत। लीनवलावनमिति व। निज्यानिमध्वनिजयाः। खारिनायाः। यानः
 विश्वकानवायमध्ववावतसर्वगीधिरुदकत्वाद्वा। यद्वा। वाक्ममध्वतिगकृति। वा। ॐ० कामः। तत्कनतितान
 यतिवन्तनः। अथवा ॐ० कामः। तनकमनीयतया काम्यतया वनिवः। उक्तं हि। कामनूयाः कर्हदवि। अर्नगादह
 वजितः। ॐ० ह्यादिपोगापिमेयादिर्त। तत्कनतितानयतीति व। ॐ० तिवनः। अक्षनालनुवोः। अन्यतवागुहा गगना
 मूजस्यवदकि। अथ कृतमहावधनस्य कामपाकं लिपूनीकनवामाह॥ यद्दीर्घागुवाख्यमिति। प्रसंगात्प्रत्यक्षवज
 साधनकममयूपदिनतावद्वागुवसाधनपुकार्यदर्शयति। प्राप्तामिति। तस्याः। अथ नूयमाह। रूतमीति।
 यदुक्तं। नवकृदनिहृदिर्वीमेकाजालविह्वलः। मूलाकपालविद्याकमाला। नाजन्महृत्तुगीविधिनूवागुवयाधे। लक्ष्मजयति
 यलुतः। कविताजायततस्या नानावलात्मणा हितति॥ तस्यात्यकिमुनयंयति। विजितिषः। पूष्टयति। पादितनूदगाकि

[illegible][illegible]

१८